मेरा मनोगत....

उत्तरं यत् समुद्रस्य हिमाद्रेश्चैव दक्षिणम् ।

वर्षं तद् भारत नाम भारती यत्र सन्ततिः ॥

"ये बात हवाओं को बताए रखना कि रोशनी होगी ,

इन चिरागों को जलाए रखना, लहू बहाकर की है, जिसकी हिफ़ाज़त हमने।

ऐसे तिरंगे को सदा दिल में बसाए रखना।"

सभी पाठक गणों को राजशेखर की ओर से अठहत्तरवें स्वतंत्रा दिवस की हार्दिक-हार्दिक शुभकामनाएं। ये स्वतंत्रता दिवस दो सौ वर्षों के कठिन संघर्ष और अनगिनत वीरों के बलिदान से प्राप्त हुआ है। कईं माताओं की कोख सूनी हुई। बहनों की राखियां किसी संदूक में दफ़न हो गईं। स्त्रियों का सिंदूर मिट गया। भारत मां लहूलुहान थी। तलवारें रक्त से सनी हुई थीं। 15 अगस्त, 1947 की सुबह देखने के लिए।

कतरा-कतरा ख़ून दिया था।

बेच जवानी जुनून दिया था।।

खड़े अंग्रेज़ माने नहीं तो,

गोलियों से भून दिया था।

ये स्वतंत्रता राजनीति से मिली नहीं है,न पैसों से खरीदी है। सौदा लहू के मोल हुआ था। आज़ाद ये हिंदूस्थान नहीं होता अगर किसी मां का बेटा इस वतन के खातिर कुर्बान न होता। सारे रिश्ते नाते भुलकर सीने पर गोलियां खानी पड़ती है। दोस्तों यूं ही देश के खातिर मरना इतना आसान नहीं होता। आज़ादी को बनाए रखने के लिए मां भारती के वीर सपूत दिन हो या रात, सुबह हो या शाम, धूप हो या बारिश, सर्दी हो या गर्मी निसर्ग की कठिन से कठिन चुनौतियों का सामना करते हुए सीना ताने सीमा पर तैनात रहते हैं।

मैं दुश्मन से नहीं डरता, मैं भारत का जवान हूं।

मरूस्थल की रेत हूं, मैं सियाचिन का आसमां हूं।

मैं लू में जलती रेत पर लेटे कहता हूं कि सर्दी आज कम है।

दिसंबर की ठंड पी कहता हूं, गर्मी का मौसम है।

मैं बर्फ़ में दफ़न होकर जिंदा निकलता हूं, सीने में अपनी सांस को टुकड़ों में भरता हूं।

मैं भारत का जवान हूं, दुश्मन से नहीं डरता।

दोस्तों, आजादी की आंतरिक सुरक्षा के लिए हमें एकजुट होकर भ्रष्टाचार, जातिवाद, पाश्चात्य संस्कृति का अंधानुकरण जैसी कईं सामाजिक बुराइयों को जड़ से उखाड़ फेंकने का प्रण लेना होगा। मैं युवाशक्ति से कुछ बातें साझा करना चाहता हूं। हम स्वामी विवेकानंद के विचारों से प्रेरित भारतवासी हैं, अटल जी के स्वप्न है।

अटल जी लिखते हैं -

15 अगस्त का दिन कहता, आज़ादी अभी अधूरी है।

सपने सच होना बाकी है,रावी की शपथ न पूरी है।

कैसे उल्लास मनाऊं मैं, थोड़े दिन की मजबूरी है।

वह दिन दूर नहीं खंडित भारत को पुनः अखंड बनाएंगे।

उस स्वर्ण दिवस के लिए आज से कमर कसे, बलिदान करें।

जो पाया उसमें खो न जाएं जो खोया उसका ध्यान करें।

धन्यवाद!!

जय हिन्द

राजशेखर स्वामी

कक्षा - 9 वीं (शंकर सदन)

रक्षाबंधन

हमारे तीज त्यौहार तो बहुत हैं, पर यह त्यौहार मेरा पसंदीदा त्योहार है। यह वो त्यौहार है जो राष्ट्र का गौरव है। इसका सामाजिक एवं सांस्कृतिक महत्व है। भारतीय परम्पराओं से बंधे इन त्यौहारों में रक्षाबंधन का अपने आप में एक पृथक महत्त्व है। यह त्योहार भाई बहन के पवित्र बंधन को प्रेम के धागों से बाँधने वाला पर्व है। यह त्यौहार स्नेह और बलिदान का उत्सव है। भारत में हर दिन कोई न कोई त्यौहार होता ही है। रक्षाबंधन हर साल श्रावण मास की पूर्णिमा के शुभ अवसर पर मनाया जाता है इसलिए इसे 'श्रावणी' भी कहते हैं। हमारा विद्यालय आवासीय विद्यालय होने के कारण यहां हम खुद ही सुंदर - सुंदर राखियां तैयार करते हैं और एक दूसरे को राखी बांधकर पूरी श्रद्धा, उल्लास और उमंग के साथ मनाते हैं।

स्नेहल डी. जाधव

कक्षा-8 वीं 'क' (मातोश्री लक्ष्मीबाई सदन)

वक्त

बीता हुआ वक्त कभी वापस आता नहीं,

वक्त किसके लिए रुकता नहीं।

वक्त का पीछा नहीं कर सकते,

बीता वक्त दुबारा नहीं ला सकते।

वक्त सबको सबक सिखाता ।

याद रखना सदा वक्त एक सा नहीं होता ।

बुरा वक्त देख मत भागो तुम,

बुरा वक्त सीख सिखाता हरदम।

वक्त के पाबंद बनो तुम ,

और किस्मत कर लो मुट्ठी में।

श्लोक

कक्षा-8 वीं ' ब ' (शंकर सदन)

अमर जवान

दिन हो या रात,

सुबह हो या शाम,

हमारे वीर जवान तैनात रहते सीमा पर,

वे आंच न आने देते, भारत माँ के दामन पर।

वे कहते हमसे भारत माँ की रक्षा हेतु ,

त्याग दो सब कुछ तू ।

वे खेले हरदम सीमा पर कुर्बानी की होली,

ताकि हम मना सकें खुशियों की दीपावली।

सलाम उन शहीदों को

जो हमें जगाकर खुद सो गए।

प्रणव

कक्षा-8 वीं 'क' (सिद्धराज सदन)

हॉस्टल की लाइफ़

हम आते हैं हॉस्टल पढ़ाई करने के लिए ,

माता-पिता को छोड़कर ।

पढ़ाई कर माता-पिता का रोशन करें नाम,

पढ़ाई न कर न करें उन्हें बदनाम।

हॉस्टल की लाइफ़ बड़ी मस्त,

छुट्टी के दिन रहते हम सुस्त।

बहाने बनाकर डॉरमेट्री में सोना,

और घर की याद में चुपके-चुपके से रोना।

पढ़ाई तो होती है बहुत,

फिर भी प्रेप में पहुंचते दस मिनट बाद,

पढ़ने तो बैठते हैं लेकिन रहता कुछ नहीं याद।

खुशी हो या गम,

हर चीज़ मिल बांटकर खाते हैं ,

और बीमारी में एक दूसरे का खूब केयर करते हैं ।

सब इंतज़ार करते लास्ट सन्डे का,

क्योंकि यही दिन होता है,

माता-पिता को मिलने का।

माहेश्वरी

कक्षा-8 वीं 'क'

मेरे गुरु

मेरा मार्गदर्शक है मेरे गुरु,

अच्छी आदतें सिखाते,

अच्छे मार्ग पर चलना सिखाते,

दूसरों की सहायता करना समझाते,

गलत रास्ते पर जाने से रोकते ,

अच्छे कामों पर शाबाशी देते।

मुझे दिन रात पढ़ाते,

मुझे लक्ष्य की ओर बढ़ते,

वे मुझमें धैर्य भरते,

कठिनाई में मार्ग दिखाते।

वे भाग्य विधाता हैं,

वे संस्कारों की खान हैं,

वे जलता दीपक हैं,

हम उस दीपक की लौं हैं।

मेरे गुरु महान हैं,

हम शिष्यों की शान है,

गुरु से ही हमारी पहचान है।

पल्लवी

कक्षा-8 वीं 'अ'(मुक्ताबाई सदन)

मैं नारी हूं

मैं नारी हूं,

मैं न किसी से डरती हूं,

मैं अन्याय से लड़ती हूं।

मुझे न समझो कमज़ोर,

कर सकती सातों सागर पार,

पढ़ने-लिखने से रखों न वंचित,

करने दो मुझे ज्ञान अर्जित।

मैं इक्कीसवीं सदी की नारी हूं,

मैं सौ-सौ पर भारी हूं,

मैं गंगा-काली-चंडी हूं,

मैं जगत जननी हूं।

स्नेहल

कक्षा-8 वीं 'क' (मातोश्री लक्ष्मीबाई सदन)

एक सवाल

आओ पूछे एक सवाल -

क्यों गरजे ये बादल?

आओ पूछे एक सवाल -

कितने सिर पे बाल?

आओ पूछे एक सवाल -

क्यों न मिला औरंगजेब को तेल?

आओ पूछे एक सवाल -

क्यों बनी ये जेल?

आओ पूछे एक सवाल -

क्यों बने ये स्कूल?

आओ पूछे एक सवाल -

क्यों बना ये सवाल?

अमन

कक्षा-8 वीं 'अ' (नरसिंह सदन)